उपसंहार

उपसंहार –

हिंदी साहित्य के विकास में जयशंकर प्रसाद का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। प्रसाद का समस्त साहित्य उपन्यास, नाटक, कहानी, काव्य, निबंध आदि विधाओ में विभाजित है। "आकाश दीप" कहानी संग्रह को परखा गया है। उनका के कहानी साहित्य कुछ मिलकर पाँच कहानी संग्रह में विभाजीत है। "आकाश दीप", "आँधी", "इन्द्रजाल", "प्रतिध्वनी", "छाया", है।

प्रसाद के "आकश दीप" कहानी संग्रह का अध्ययन करने के बाद यह पता चलता है कि, "आकाश दीप" कहानी संग्रह में कुल मिलकर उन्नीस कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ उद्देशपूर्ण और महत्वपूर्ण हैं। प्रेम–चित्रण, प्रकृति – चित्रण, सौन्दर्य – चित्रण का समावेश हुआ है।

प्रसाद की पहली कहानी "आकाश दीप" है। जिसमें प्रसादने ऐतिहासिक परिवेश का चित्रण किया है। कहानी की नायिका चम्पा बुध्दगुप्त से प्रेम भी करती है और घृणा भी। चम्पा उसे अपने पिता का हथियारा मानती है। इसमें प्रसाद ने त्याग और समर्पण पूर्ण प्रेम का चित्रण किया है । साथ ही प्रकृति – चित्रण भी पाया जाता है।

ममता अपने नाम को किस प्रकार सार्थक बना देती है यह प्रसादने "ममता" कहानी के माध्यम से दिखाया है। इस कहानी में भारतीय संस्कृति का दर्शन किया गया है। अतिती को भगवान का रुप माना जाता है। इसलिए न चाहते हुए भी ममता मुगल को आश्रय देकर अपना और देश का नाम सार्थक करती है।

"स्वर्ग के खंडहर में" यह एक ऐतिहासिक प्रेमकथा है। यह कहानी मीन – गुल – बहार और देवपाल, लज्जा, तारा की प्रेम कहानी है। इस कहानी के माध्यम से उस काल की राजनितिक सच्चाई पर प्रकाश ड़ाला है यह पिता – पुत्री की कहानी है।

हर इन्सान एक – दुसरे को समझ नहीं सकता यह बात "सुनहला साँप" इस कहानी के माध्यम से दिखाई है। यह कहानी सफल प्रेम का उदाहरण है। पहली मुलाकात में रामु और नेरा में प्रेम हो जाता है। यह प्रेम तभी माना जाता है, जब दोनों की शादी हो जाए । रामू और नेरा की शादी हो जाती है। यह सफल प्रेम कहानी है।

आज तक ऐसा नहीं हुआ है कि, हिमालय के सौन्दर्य ने किसीको आकर्षित न किया है। ऐसे ही हिमालय का सौन्दर्य "हिमालय का पथिक" कहानी में चित्रीत किया है। इसमें प्रकृति चित्रण का भी समावेश हुआ है । यह एक अलौकिक प्रेम कहानी है। कहानी में पथिक और किन्नरी एक–दूसरे से प्रेम करते हैं। वृध्द उनके प्रेम को अस्विकार करते हैं। तब दोनों प्रेमी बर्फ के चट्टानों में खो जाते हैं। स्त्री और पुरूष का सच्चा प्रेम अलौकिक होता है।

भारत में धर्म का बोलबाल है। मगर असल में लोग धर्म, दया, प्रेम, इन्सानियत भूल जाते हैं। इसका चित्रण प्रसाद ने ''भिखारिन'' कहानी के माध्यम से किया है। भिखारिन की भूक मिटाना इसे कोई धर्म नहीं मानता। भिखारिन से शादी की बात कही जाती है जैसे उसकी गरिबी का मजाक उड़ाया जाता है। भिखारिन भी उसका मुँहतोड़ जवाब देती है कि, दो दिन से कुछ मांगने पर नहीं मिला। ब्याह करके निभाने की बात दूर है। इस कहानी के माध्यम से प्रसाद ने रूढ़ी और परंपराओंका चित्रण किया है।

हिन्दू समाज में विधवा औरत के लिए पीडा, यातना और अपमान भरी जिंदगी बितानी पड़ती है यह ''प्रतिध्वनी'' कहानी के माध्यम से दिखाया है। ननंद रामा का व्यंग्य तारा के दिल का छेदता है। समाज काल की क्रूर खेल का शिकार कैसे होता है यह कहानी के माध्यम से दिखाया है । परिवार में प्राय: स्त्रियों में द्वेषभाव देखा जाता है। इसका परिणाम इस कहानी के माध्यम से दिखाया है।

प्रेम के दो रूप होते हैं सफल प्रेन और असफल प्रेम इसका चित्रण प्रसाद ने ''कला'' कहानी के माध्यम से किया है। जब दो प्रेमी शादी के बंधन में बंध जाते हैं तो उसे सफल प्रेम माना जाता है और जब प्रेम एकतर्फा होता है तो वह असफल प्रेम माना जाता है। रूपनाथ और रसदेव दोनों कला से प्रेम करते हैं। दानों में से कला रसदेव को चुनती है। उनका प्रेम सफल होता है।

''देवदासी'' कहानी में प्रसाद ने रूढ़ी और परंपरा में फँसे लोगों का चित्रण किया है। देवदासी की प्रथा बनाकर धर्म के ठेकेदार उसे अपनी ऐय्याशी के लिए कैसे इस्तेमाल करते हैं इसका चित्रण ''देवदासी'' कहानी में किया है। अशोक देवदासी पद्मा से प्यार करता है। उसके साथ शादी करके उसे सम्मान की जिंदगी देना चाहता है। मगर ऐसा संभव नहीं होता है। इस कहानी के माध्यम से प्रसाद ने देवदासी जैसी कूप्रथा पर व्यंग्य किया है। इसके लिये वह समाज को ही दोष देते है। जिसने ऐसी प्रथा को बनाया है। कहानी में सामाजिक समस्या को उठाया है।

''समुद्र संतरण'' यह धीवर बाला और राजकुमार की प्रेम कहानी है। राजकुमार अपना राजवैभव त्यागकर धीवर बाला के साथ रहना चाहता है। एक राजकुमार होकर वह एक सामान्य लड़की धीवर बाला से प्रेम करता है। प्रेम में इन्सान सबकुछ भुल जाता है। यह इस कहानी में दिखाया है।

वैराग का मतलब सभी भौतिक सुख–समाधनाओं से दूर रहना है यह ''वैरागी'' इस कहानी के माध्यम से प्रसाद ने दिखाया है। वैरागी होकर भी उसे अपनी झोपड़ी के प्रति मोह होता है। आश्रय मांगने के लिए आयी स्त्री उसे कारण पूछती है। वैरागी अंधकार में लय हो जाता है। इस कहानी के माध्यम से प्रसाद ने वैराग्य वृत्ति का दर्शन करवाया है।

बनजारें व्यापार के लिए घूमते रहते है। ऐसे ही बनजारे नंदू का चित्रण ''बनजारा'' कहानी के माध्यम से किया है। नंदू से मोनी प्यार करती है। नंदू चला जाता हैं। फिर वह वापस आता है तो मोनी खामोश रह जाती है। नंदू अपने दिल में प्रेम के ख्वाब सजाकर आता है लेकिन असफल हो जाता है। यह नंदू और मोनी की अधूरी कहानी है। जब मोनी उसे अपनाना चाहती है तब वह चला जाता है। इससे यह पता चलता है कि, जो बात वक्त पर हो सकती है वह बात वक्त बीत जाने पर संभव नहीं हो सकती।

''चूडीवाली'' कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि, समाज में अनेक तरह के व्यवसाय करनेवाले लोग होते हैं । परंतु नाच–गाना करके जीवन बिताने वालों को समाज में कोई महत्व नहीं होता। इस कहानी के माध्यम से यह बात स्पष्ट होती है। चूडीवाली सौभाग्य भरी जिंदगी जीना चाहती है। लेकिन असफल हो जाती है। इस कहानी के माध्यम से प्रसाद ने चूडीवाली का एकनिष्ठ प्रेम चित्रित किया है। वेश्या भी तन से ना सही पर अपने मन से एक ही व्यक्ति से प्रेम करती है। वैसे ही चूडीवाली सरकार से प्रेम करती है इस कहानी के माध्यम से प्रसादी ने यह दिखाया है कि, वेश्या का भी मन होता है। और अपने मन से किसी को चाहने का उसे पूरा अधिकार होता हैं। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से एकनिष्ठ प्रेम को दर्शाया है।

गरीब लोगों के जीवन का मूल्य राजा–महाराजाओं के पास कुछ भी नहीं होता इस बात को प्रसाद ने ''अपराधी'' कहानी के माध्यम से दिखाया है। कामिनी राजा की हवस का शिकार होती है। कामिनी का पुत्र राजा का बेटा होकर गरीबी में जीवन बिताता है और आखिर में राजा के क्रोध का शिकार होता है। इससे स्पष्ट होता है कि, कामिनी पहले अपना सबकुछ खो देती है और बाद में अपना बेटा भी। कामिनी के हिस्से में सिवाय दु:ख के कुछ भी नहीं आता। मजबूर स्त्री कभी–कभी हालातों का शिकार कैस बन जाती है यह प्रसाद इस कहानी के माध्यम से चित्रित करते है।

''प्रणय–चिहन्'' यह एक प्रेम कहानी है। कहानी में प्रेमी एकांत में चला जाता है। अपनी प्रेमिका को संदेश भेजता है तो वह मिलने के लिए आती है। प्रेमी उसके पास प्रणय चिहन् मांगता है। लेकिन वह अंगूठी सेवक को देती है। प्रेमिका अपने प्रेमी को एकांतवासी दुनिया से बाहर लाती हैं। दोनों एक दूसरे में खो जाते हैं। इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि, इन्सान प्रेम में सुख, दु:ख सबकुछ भूल जाता हैं। प्रेम इतना श्रेष्ठ है जो इन्सान को कहाँ से कहाँ ले जाता है।

सरला सामाजिक रूढ़ि का शिकार कैसे बन जाती है इसका चित्रण ''रूप की छाया'' इस कहानी के माध्यम किया है। सरला का बाल–विवाह हो जाता है। कहानी के माध्यम से प्रसाद ने बाल–विवाह जैसी सामाजिक प्रथा पर व्यंग्य किया है। सरला शैलनाथ को अपना पति समजती है। लेकिन वह उसका पति नहीं होता हैं । शैलनाथ उसे छोड़कर चला जाता है और सरला की रूप की छाया विलीन हो जाती है। इस कहानी के माध्यम से सामाजिक रूढि और परंपरा का चित्रण किया है। बाल–विवाह का शिकार हुयी सरला कि जिंदगी कैसे बरबाद हो जाती है यह प्रसाद ने दिखाया है।

प्रसाद प्रकुति प्रेमी माने जाते हैं। प्रकृति का सौंदर्य उन्होंने बड़े अच्छे ढ़ंग से चित्रित किया है। ऐसे ही फूल का चित्रण प्रसाद ने ''ज्योतिष्मती'' कहानी के माध्यम से किया है। एक बालिका उस फूल कि तलाश करती है। वहां पर उसकी मुलाकात युवक से होती है। दोनों ज्योतिष्मती फूल ढूंढते हैं तब बालिका उसे बताती है, उस फूल को प्रेमी ही तोड़ सकता है तभी उसके गुण का फायदा हो सकता है। युवक की छाया पड़ने से फूल मेघ में विलीन हो जाता हैं। प्रस्तूत कहानी में प्रकृति के अनोखे चमत्कार को चित्रित किया है।

''रमला'' यह प्रेम कहानी है। इसमें प्रकृति का चित्रण आया है। मंगल के धक्के से रमला गिर जाती है और उसकी मुलाकात साजन से हो जाती है। साजन के मन में प्यार जाग जाता हैं। बाद में मंगल के पास रमला रूकती है और साजन चला जाता है।

''बिसाती'' कहानी में प्रसाद ने गाँव का और प्रकृति का चित्रण किया हैं। शीरी के सपने में एक युवक पीठ पर सामान लेकर बेचते घुमता दिखायी देता हैं। शीरी उसका बोझ कम करना चाहती है। शीरी की शादी में एक युवक कश्मिरी सामान लेकर आता है। युवक सामान रखकर चला जाता है। शीरी उसका बोझ कम करती है, मगर दाम नहीं देती।

प्रसाद की कहानियों में देशकाल–वातावरण, प्रकृति–चित्रण, सभ्यता और संस्कृति, समाज में चले आ रही गलत रूढ़ियाँ और परंपराओं का पर्दाफाश किया गया है। इन बातों को अगर हम ध्यान में रखते हैं तो 'चूडीवाली', 'देवदासी', भिखारिन', 'बनजारा' आदि कहानियों में समाज में चले आ रही रूढ़िओं का शिकार नारी कैसे होती है यह हमें दिखाई देता है। मंदिर जैसे पवित्र स्थल में भी जो अपने आप को धर्म के ठेकेदार मानते हैं वे ही अनिती और अत्याचार का केंद्र बनाते हैं। 'चूडीवाली' कहानी में कोई भी स्त्री सन्मान से जीने की कामना करती है वैसे चूडीवाली भी करती है। मगर समाज उसे अनितिमय जीवन बिताने पर मजबूर करता है। चूडीवाली उससे भागती है मगर दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता।

''अपराधी'' यह कहानी गरिबों का जीवन किस तरह से पैरों–तले कूचला दिया जाता है इसका जीता–जागता उदाहरण है। इस कहानी की नायिका राजा की रानी होकर भी गरिबी में दिन बिताती है। उसका बेटा असल में राजा बनकर जिना चाहिए मगर उसका जीवन तो दर्दभरी मौत का शिकार बन जाता हैं। उसकी माँ अनचाहे बच्चे की माँ बनकर जीवन बिताती है।

इस कहानी संगंह की और एक खाँसियते है कि, इसमें हमारी महान सांस्कृतिक विरासत का चित्रण भी हमें दिखाई देता है। ''ममता'' इस कहानी में हमारे प्राचीन शिल्प का चित्रण करते–करते, मेहमान ही भगवान मानकर अपने शत्रू को पनाह देनेवाली ममता हमारी संस्कृति की देन है । 'वैरागी' कहानी में हमारी प्राचीन परंपरा में साधु और योगी इनमें वैराग का महत्वपूर्ण स्थान हैं। जब उसकी झोपड़ी में एक स्त्री आकर साहायता की अपेक्षा करती है तो उसे वैरागी की, संदेश भरी हलचल देखकर वह बताती है, 'सुख–सुविधा को ठुकरानेवाले वैरागी को झोपड़ी के प्रति मोह अच्छा नहीं।' तब वह अपनी वैरागभरी राह पर चलने के लिए विवश हो जाता है।

प्रसाद के कहानी जगत में प्रकुति का चित्रण भी अनूठा हुआ हैं। हिमालय की घाँटी प्राकृतिक संपदा से भरी पड़ी है उसका चित्रण प्रसाद की कहानियों में पन्ने–पन्ने पर नजर आता है। ''आकाश–दीप'' कहानी में समंदर का नीला पानी, तूफान में उठने वाली लहरे, चांदनी रात का अनोखा सौन्दर्य चित्रित हुआ है। ''हिमालय का पथिक'' कहानी में प्रकृति चित्रण महत्वपूर्ण अंग है। हिमालय का हरा–भरा प्रदेश, बर्फ की चट्टान, बर्फ के पानी से बहनेवाली नदियाँ, झरणे, फूल, पौधे, पशू–पंछी आदि का सुहाना चित्रण इस कथा में नजर आता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, प्रसाद की कहानीयों में प्रकृति का और सुहाना दृश्य भी है और हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का चित्रण भी हैं। जहाँ एक और हमारी सभ्यता की महानता चित्रण हुआ है तो दूसरी ओर समाज की गलत रूढ़ी, परंपराओं पर करारा व्यंग्य भी हमें नजर आता है। प्रसाद सामाजिक विषमता का चित्रण करते–करते धर्म के नाम अधर्म करनेवाले लोगों का चित्रण भी बखुबी करते हैं। हमारी प्राचीन शिल्पकला बारबार होनेवाले युध्द के कारण खंड़हर में कैसे बदल रही है इसका जिता–जागता चित्रण भी है।

संक्षेप में प्रसाद प्रकृति के चितेरे हैं, सांस्कृतिक विरासत के अभिमानी है, गलत रूढी के विरोधी हैं, शब्दों के भंडार के रचेता है, सफल प्रेम के साथ–साथ असफल प्रेम भी चित्रत करने में सफल हुये हैं।